जैसलमेर किला

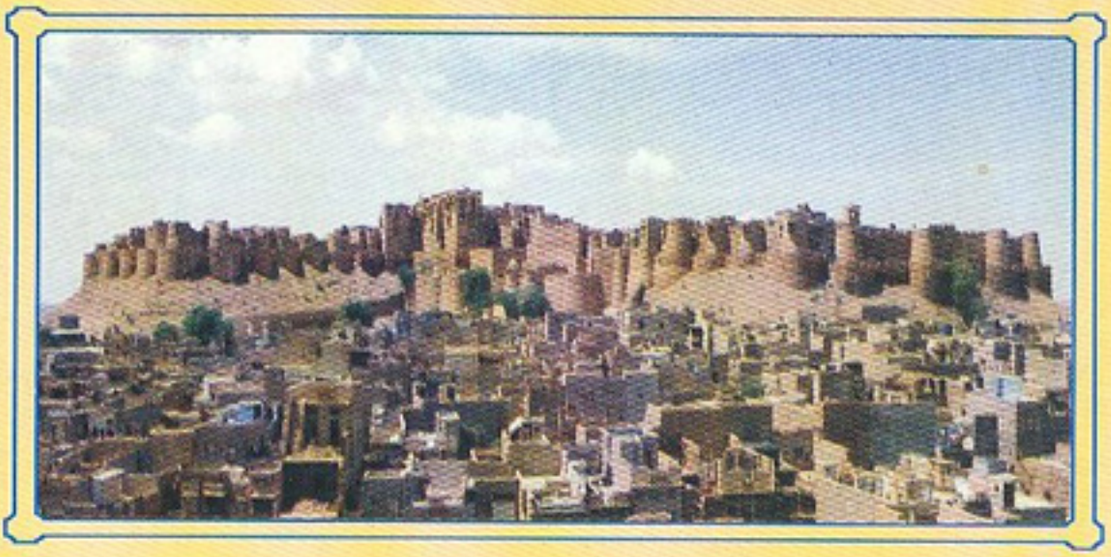

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

जयपुर मण्डल, जयपुर

2004

जैसलमेर किला

राजस्थान के सुदूर पश्चिमी अंचल में मरूप्रदेश के नाम से प्रसिद्ध क्षेत्र के मध्य त्रिकूट पर्वत पर अपनी विशिष्ट शानो शौकत के साथ स्थित जैसलमेर का किला (26° 55' उत्तरी अक्षांश तथा 70° 55' पूर्वी देशान्तर) कभी शक्तिशाली भाटियों की राजधानी रहा है। पीले रंग के चूने व बलुआ पत्थरों से निर्मित यह सुदृढ़ किला भाटी शासकों के गौरव का ज्वलंत प्रमाण है। अपनी अवस्थिति व प्राकट्य विशिष्टता के कारण यह किला राजस्थान के वास्तु इतिहास में अपना अद्वितीय स्थान रखता है।

भाटी मूलतः पंजाब के सियालकोट क्षेत्र के निवासी थे, जिन्होने सन् 583 ई0 के लगभग पूरे पंजाब पर अपना आधिपत्य कायम कर लिया । सन 623 ई0 के लगभग भाटी शासकों ने जैसलमेर से 120 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम स्थित तानोट पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल रहे। सन 731 ई0 में प्रथम भाटी शासक "केहर" ने यहाँ एक गढ़ी का निर्माण कराया। 10 वी सदी ई0 में भाटी शासक देवराज ने लोधरा राजपूत नृपभारू को हराकर लोद्रवा पर अपना अधिकार स्थापित कर महारावल की उपाधि धारण की । लोद्रवा ने दो बार मुस्लिम आक्रमणकारियों के विध्वंसात्मक प्रहारों को झेला । प्रथम, सन 1025 ई0 में गजनी के महमूद द्वारा, तथा दूसरी बार भोजदेव के शासन काल में सन 1178 ई0 में मोहम्मद गोरी के द्वारा आक्रांत हुआ, जब वह अपनी विजय यात्रा के कम में गुजरात की ओर बढ़ रहा था। सुरक्षा की दृष्टि से लोद्रवा व्यवस्थित न होने के कारण भोजदेव के पुत्र जयसल ने यहाँ से 16 किलोमीटर दक्षिण पूर्व वर्तमान जैसलमेर में एक नये दुर्ग की नींव डाली, जिसे जैसलमेर नाम दिया। अपने शासन काल में जयसल किला का कुछ भाग एवं कतिपय द्वारों का निर्माण करा सका, जबकि शेष भाग उसके पुत्र व उत्तराधिकारी रावल शलिवाहन द्वितीय द्वारा सन् 1244 ई0 तक पूर्ण करा लिया गया।

"सोनार किला" की उपाधि से विभूषित यह विशाल किला शहर के मीलों दूर से ही दिखाई पड़ने लगता है। 11.28 हेक्टेयर के क्षेत्र में फैला यह सम्पूर्ण किला दो समानान्तर मजबूत दीवारों से घिरा है, जिसे लगभग 10 मीटर ऊचाँई वाले कुल 81 बुर्जो से सुदृढ़ किया गया है जिनमें बंदूक दागे जा सकने वाले छिद्रों के साथ ही आगे की ओर झाकते हुए मेहराबदार दीर्घाऐं है। दोनों दीवारों के बीच 6 से 8 मीटर चौड़ा गलियारा है जिसे मोरी के नाम से जाना जाता है। पहाड़ी के तलहटी में पुनः एक मजबूत दीवार निर्मित है जो वस्तुतः पहाड़ी के ढलान के कटाव को बचाने के उदेश्य से निर्मित की गई । यह दीवार ठोस पाषाण खण्डों व बिना मसाले के निर्मित है। किले में प्रवेश हेतु उत्तर पूर्व में चार प्रवेश द्वार निर्मित है जिन्हें कमशः - अखय पोल, गणेश पोल, सूरज पोल व हवा पोल के नाम से जाना जाता है। इनमें से अखय पोल अन्य की तुलना में बाद का माना जाता है, जिसे महारावल अक्षय सिंह (सन् 1727-62 ई0) ने मुख्य प्राचीर के विस्तार के समय निर्मित करवाया।

विशिष्ट शैली में निर्मित महलों, हवेलियों, प्रवेश द्वारों के साथ ही अनेकानेक सुन्दर जैन एवं हिन्दू मंदिर भी इस काल में अस्तित्व में आये, जो तत्कालीन शिल्पकारों के कला-कौशल व प्रवीणता के साथ ही भाटी शासकों के असाधारण कलात्मक योगदानों के मूक साक्षी बने है तथा आज भी सौंदर्य पिपासु भ्रमणकारियों एवं पर्यटकों को बर्वस अपनी ओर आकर्षित करते हैं। हिन्दू धर्म के साथ-साथ जैसलमेर के शासकों ने जैन सम्प्रदाय को भी पूर्ण संरक्षण प्रदान किया, जिसके उदाहरण किले में स्थित अनेक जैन मंदिर है। इनमें प्रमुख शान्तिनाथ, संभवनाथ, पार्श्वनाथ, चंद्रप्रभु, ऋषभदेव, शीतलनाथ तथा महावीर मंदिर है।

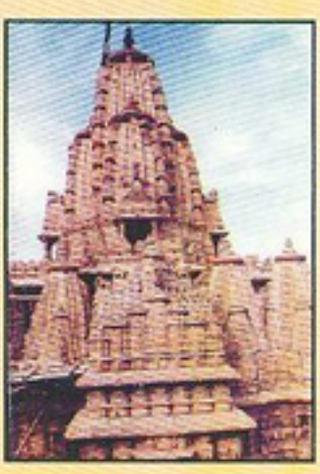

पार्श्वनाथ मंदिर :- किले में स्थित मंदिरों में यह सर्वाधिक प्राचीन तथा सौन्दर्य युक्त मंदिर है। मूल वास्तु योजना में यह मंदिर चार स्तम्भों पर आधारित मुखमण्डप के बाद कमिक रूप से नटमंडप, भोगमंडप, अंतराल तथा गर्भगृह का संयोजन किया गया है। मंदिर के भीतरी दीवारों पर मानव व पशुओं की सुन्दर आकृति उकेरी गयी है। नागर शैली युक्त मंदिर का शिखर आमलक से सुसज्जित है जिसके ऊपर एक कमल पुष्प युक्त कलश है। नटमंडप के छत के भीतरी भाग में पाषाण घटित सौन्दर्य का सघन अंकन किया गया है। नटमंडप से जुड़ा बरामदा कमबद्ध स्तम्भों की दोहरी पंक्ति से घिरा है तथा इनकी छत पाषाण घटित सजावटों से पूर्ण है। पार्श्व भाग में

कक्षों की एक श्रृंखला है जिनमें बैठे तीर्थंकर की प्रतिमा विराजमान है। मंडप के स्तम्भों में नौ मीनारों की उपस्थिति के कारण यह मंदिर नवतोरणीय भी कहा जाता है। मंदिर का जंघा भाग मिथुन युग्मों की मूर्तियों से अलंकृत है।

संभवनाथ मंदिर :- इस मंदिर का निर्माण सन् 1494 ई0 में ओसवाल बंधुओं के द्वारा प्रारम्भ किया गया था और अगले तीन वर्षो में पूरा कर लिया गया। पार्श्वनाथ मंदिर के बायीं ओर स्थित इस मंदिर में पार्श्वनाथ मंदिर के रंगमंडप से होकर पहुंचा जा सकता है। मूल योजना में यह पार्श्वनाथ मंदिर के समान ही है। रंगमंडप की अंदरूनी छत वलयाकार उभारयुक्त धारियों से अलंकृत है, तथा मुख्य केन्द्र में कमलाकार सजावटी लटकन मौजूद है, जिसमें दैवीय संगीतज्ञों तथा नृतकों का सुंदर संयोजन किया गया है। शिखर भाग आकार में लघु है एवं मंडप की छत घंटाकार है। इस मंदिर के मंडोवर की प्रतीति पार्श्वनाथ की तुलना में कुछ ज्यादा ही तीक्ष्ण मालूम होती है। नृतकों तथा अन्य सजावटी मूर्तियों का लगभग अभाव है। मंदिर के नीचे दो भूमिगत कक्ष है, जिसमे महत्वपूर्ण जैन पांडुलिपियों को सुरक्षित रखा गया है।

शीतलनाथ जी मंदिर :- पार्श्वनाथ मंदिर के सम्मुख स्थित मुख्य तोरण के दाहिने पार्श्व में शीतलनाथ जी का मंदिर स्थित है। पार्श्वनाथ मंदिर के रंगमण्डप से होकर इस मंदिर तक सुगमता से पहुँचा जा सकता है। मूल वास्तु योजना में यह मंदिर पार्श्वनाथ के समान ही है। सम्पूर्ण वास्तु एक साथ देखे जाने पर कुछ सिमटा सा जान पड़ता है। मंदिर में सजावटी प्रतिमाओं का उकेरन अपेक्षाकृत कम है।

चंद्रप्रभु जी मंदिर :- पार्श्वनाथ मंदिर के दाहिने पार्श्व में स्थित चंद्रप्रभु जी मंदिर में प्रवेश की व्यवस्था सीढ़ीदार पायदानों के द्वारा की गयी है, जो सीधे इस मंदिर के रंगमंडप में पहुंचता है। यह तीन मंजिला मंदिर है जिसका रंगमण्डप गुम्बदाकार है। मंदिर की मुंडेर लघु शिखरों की अनुकृतियों की एक श्रृंखला द्वारा निर्मित है। मुख्य शिखर ऊपरी भाग में खुले लघु दीर्धाओं से युक्त है जिनमें पहुंचने हेतु एक गलियारा है, जो मंदिर में तीसरे तल की उपस्थिति दर्शाता है। मुख्य शिखर और इसके उरुश्रृंगों की वक रेखा, उसी सतह पर कमशः ऊपर की ओर उभरते लघु शिखरों की अनुकृतियों द्वारा निर्मित की गयी है।

ऋषभदेव जी मंदिर :- चन्द्रप्रभु जी मंदिर के दाहिनी ओर लालित्य पूर्ण मुद्रा में खड़ा ऋषभदेव जी का मंदिर है। इस मंदिर के अर्द्धमण्डप के ठीक बाद खुला आंगन है जिसकी छत घण्टाकार है। शिखर का ऊपरी भाग कमशः घटते लघु शिखरों की अनुकृतियों से सुसज्जित है। रंग मण्डप के छत के अन्दरूनी हिस्से में सजावटी प्रतिमाओं का अभाव है परन्तु मण्डोवर भाग में नारी आकृतियों को स्थान दिया गया है।

शान्तिनाथ एवं कुन्थुनाथ जी मंदिर :- यह एक दो मंजिला मंदिर है, जिसमें नीचे के गर्भगृह में कुन्थुनाथ जी तथा ऊपरी तल में शांतिनाथ जी की प्रतिमा स्थापित है। जगती का विस्तार अपेक्षाकृत छोटे से क्षेत्र में है। निचले रंगमंडप में चार तोरण स्तम्भों की व्यवस्था है जबकि ऊपरी तल के छत का अंदरूनी भाग नृत्यरत प्रतिमाओं से सजाया गया है। मूल प्रासाद की छत सीढ़ीदार पिरामिडाकार स्वरूप में संयोजित है, जिसमें चारों ओर से झांकती दीर्धाऐं है। इस विशिष्ट छत को दहाड़ते सिंहो के उत्कीर्णन से सौन्दर्य युक्त किया गया है जिसमें शीर्ष पर आमलसर एवं कलश स्थापित है। मूल वास्तु योजना में यह मंदिर कमिक रूप से मुखमंडप, अर्द्धमंडप, मंडप, अंतराल तथा तत्पश्चात गर्भगृह युक्त है।

जैन मंदिरों के साथ-साथ किले में अनेक हिन्दू मंदिरों का भी निर्माण हुआ जो शैलीगत दृष्टि से जैन मंदिरों के समकक्ष है। मुख्य मंदिरों में लक्ष्मीनारायण, रत्नेश्वर, सूर्यमंदिर, चामुण्डा माता मंदिर एवं रणछोड़ मंदिर हैं।

लक्ष्मीनारायण मंदिर :- पश्चिमाभिमुख इस मंदिर में उत्तर एवं दक्षिण दोनों दिशाओं से प्रवेश किया जा सकता है। ऊँची जगती पर स्थित यह मंदिर क्षैतिज योजना में कक्षासन एवं प्रदक्षिणा पथ युक्त मंडप तथा गर्भगृह युक्त है। गर्भगृह के ऊपर अंगशिखरों से युक्त वकरेखीय शिखर मौजूद है। हिंगलाज माता उक्त मंदिर की अधिष्ठात्री देवी है।

सूर्य मंदिर :- ऊँचे अधिष्ठान पर स्थित यह मंदिर पूर्वाभिमुख है जिसमें प्रवेश हेतु दोनों ओर से सीढ़ियों की व्यवस्था है। क्षैतिज वास्तु योजना में यह मंदिर कमिक रूप से अर्ध मण्डप, कक्षासन युक्त मण्डप, अंतराल एवं तत्पश्चात् गर्भगृह है। अद्यतन स्थानीय लोगों के द्वारा इस मंदिर का पुर्ननिर्माण कराया जाता रहा है, जिसमें कक्षासन के ऊपरी भाग से छत तक एक अतिरिक्त दीवार खड़ी की गई है। गर्भगृह के ऊपर लघु शिखरों की प्रतिकृतियों से युक्त वकरेखीय शिखर है जिनसे छलांग लगाते सिंहों का प्रदर्शन हैं। मंदिर के दक्षिणी पार्श्व में मूल मंदिर से सटा नागरशैली का एक अन्य लघु देवालय स्थित है।

चामुण्डा माता का मंदिर :- चामुण्डा माता को समर्पित यह पूर्वाभिमुख मंदिर वास्तु योजना में मण्डप तथा प्रदक्षिणा पथ युक्त गर्भगृह को समायोजित करता है। मण्डप के सम्मुख एक संकरी दीर्घा है जो मेहराब वाले द्वारों से खुला है। मंदिर का आन्तरिक भाग सादा है, पर बाह्य भाग जगती से लेकर मुंडेर तक पाषाण घटित शिल्प के सौन्दर्य से अटा पड़ा है। पूर्वी भाग के मुंडेर पर अन्य मंदिरों की तरह दैवीय वादिकाओं (संगीतज्ञों) को प्रदर्शित किया गया है। मंदिर का मुख्य शिखर उरूश्रृगों से युक्त है जिसके चारों दिशाओं मे छलांग लगाते सिंहो को उकेरा गया है एवं शिखर के ऊपर आमलक शंकु शीर्ष युक्त है।

रत्नेश्वर मंदिर :- पूर्वाभिमुख इस मंदिर में उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं से सीढ़ियों द्वारा प्रवेश की व्यवस्था है। वास्तु योजना में कमिक रूप से इस मंदिर में मुखमण्डप, प्रवेश गलियारा, कक्षासन एंव प्रदक्षिणा पथ वाला स्तम्भ युक्त मण्डप तथा गर्भगृह है। उत्तरी एवं दक्षिणी हिस्सों में पार्श्व देवताओं हेतु स्थान नियत है। स्तम्भ युक्त मण्डप में यद्यपि एक शिवलिंग स्थापित है तथापि मुख्य देवता गर्भगृह में विराजमान है। मण्डप की छत का अब्दरूनी हिस्सा कुंडलीकार हैं, जबकि गर्भगृह कमशः घटते क्षेत्रफल वाले पाषाण पट्टिकाओं के वलय के रूप में (कॉरवेल्ड) है। प्रवेश द्वार को शिव , विष्णु मालाधारी यक्षों व अन्य गणों के अंकन से सुसज्जित किया गया है। ललाटबिम्ब पर ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की प्रतिमा उकेरी गई है। सभा मण्डप व पार्श्व देवताओं के कक्ष के ऊपर गुम्बदाकार छत की योजना है। गर्भगृह का शिखर लघु शिखरों से युक्त वक रेखीय है तथा उनसे छलांग लगाते सिंहो को प्रदर्शित किया गया है। आमलक के ऊपर कलश विद्यमान है पर शीर्ष शंकु लुप्त हो चुका है। मंदिर के दक्षिणी भाग में एक अन्य नागर शैली का लघु देवालय स्थित है।

रणछोड़ जी मंदिर : पूर्वाभिमुख सांधार शैली में निर्मित यह मंदिर एक ऊँचें अधिष्ठान पर स्थित है, जहाँ तक पहुंचने हेतु सीढ़ियों की व्यवस्था है। यह मंदिर विष्णु (कृष्ण) एवं रूक्मणी को समर्पित है। संगमरमर निर्मित मुख्य प्रतिमा गर्भगृह में प्रतिष्ठापित है। गर्भगृह के सामने आयताकार मण्डप मौजूद है जिसके पूर्वी व दक्षिणी भाग में कक्षासन है, जबकि उत्तर व पश्चिमी भाग बन्द है। गर्भगृह के चतुर्दिक प्रदक्षिणा पथ का संयोजन किया गया है।

महल एवं हवेलियाँ :- किले में स्थित पाँच महलों का समूह, कमशः रंग महल, सर्वोत्तम विलास, गज महल या गज विलास, जनाना महल तथा मोती महल आकर्षण के केन्द्र है। हवा पोल के ठीक ऊपर स्थित रंग महल, महारावल मूलराज द्वितीय (सन् 1762-1820 ई0) द्वारा बनवाया गया था। भित्ति चित्रों एवं अन्य विभिन्न प्रकार के अलंकरणों से युक्त होने के कारण इसे रंग महल कहा जाता है। सभी भवनों में सर्वाधिक सुन्दर सर्वोत्तम विलास महारावल अखय सिंह द्वारा (सन् 1722-1762 ई0) निर्मित कराया गया था । नीले रंग के टाईल्स तथा काँच के मोजाइक अलंकरण के कारण यह शीशमहल सा दीख

पड़ता है। इन इमारतों के निकट ही एक ऊँचे अधिष्ठान पर गज विलास स्थित है जिसे महारावल गज सिंह ने सन् 1884 ई0 में बनवाया । यह तीन मंजिला भवन है जिसकी प्रत्येक मंजिल बाहर की ओर झांकती दीर्धाओं की श्रृंखला से सुसज्जित है। इसका अग्रभाग सुराहीदार स्तम्भों तथा नुकीले शीर्ष वाले मेहराबों पर आधारित है। इसके साथ ही बाहर की ओर निकले हुए दीर्धाओं, झरोखों से इसकी भव्यता देखते ही बनती है। सर्वोतम विलास महल के पीछे के भाग की रिक्तता को रंगमहल तथा जनाना महल की उपस्थिति से पूर्ण कर दिया गया है। इसके सम्मुख का मेहराब की सजावट अत्यधिक आकर्षक है तथा इमारत का सन्मुखीय भाग वनस्पतिक अलंकरणों से सुसज्जित है। मोती महल का निर्माण सन् 1813 ई0 में महारावल मूलराज द्वितीय के द्वारा कराया गया था ।

प्रवेशद्वार/पोल :- किले में प्रवेश हेतु कमशः अखय पोल, गणेश पोल, सुरज पोल तथा हवा पोल निर्मित हैं । इनमें से प्रथम अखय पोल या अक्षय पोल, महारावल अक्षय सिंह (सन् 1722-1762 ई0) के द्वारा मूल प्राचीर के विस्तार के समय बनवाया गया एवं तदनुरूप उक्त द्वार का नाम अखय पोल पड़ा। पुनश्च पाषाण गुटिकाओं से निर्मित रास्ते पर चलते हुए सूरज पोल आता है जिसे महारावल भीम ने बनवाया था। इस द्वार के ऊपरी भाग पर एक मेहराबदार तोरण बना है, जिसमें सूर्य का अंकन हुआ है। इसके दाहिने भाग में अष्टकोणीय छतरी युक्त निगरानी स्तम्भ स्थित है। इस नोंकदार द्वार को पार करने के पश्चात् एक तीखा मोड़ है, जिसके ठीक बाद गणेश पोल अथवा भूत्र पोल स्थित है। उक्त द्वार के ललाट बिम्ब पर गणेश प्रतिमा की उपस्थिति के कारण ही सम्भवतया इसे गणेश पोल की संज्ञा दी गई। कुछ आगे बढ़ने पर हवा पोल या रंग पोल अपने शीतल हवा के झोंकों से थके हुये पर्यटकों का स्वागत करता है। इस प्रवेशद्वार के भीतरी कक्ष में पाषाण की शिलायें आज भी पथिकों को विश्राम देती है। उक्त तीन प्रवेशद्वार भीम ओर मनोहरदास के काल में सन् 1577से1623 ई0 के मध्य बनाये गये थे।

संरक्षण : समस्याएं एवं मानक :- वस्तुतः जैसलमेर किले का निर्माण राज परिवार के निवास के उदेश्य से कराया गया था, लेकिन कालांतर में बढ़ती आबादी तथा अतिरिक्त निर्माणों के कारण स्मारक के गौरव का कमिक ह्रास हुआ है। वर्तमान में किले की सघन आबादी किले पर एक अतिरिक्त भार हो गई है जिसका वहन किले के क्षमता के प्रतिकुल है। किले में निर्माण के समय की बनी जल निकास प्रणाली का प्रयोग अब न होने के कारण तथा वर्तमान में नई अव्यवस्थित प्रवाह प्रणाली विकसित कर लिए जाने के कारण अपशिष्ट जल का समुचित निकास नहीं हो पा रहा है। इस बाधित जल का रिसाव किले की दीवारों के साथ होने के कारण प्रयुक्त पत्थरों की मूल चमक लगातार खोती जा रही है। यदि यह प्रकिया यथाशीघ्र रोकी नही गई तो निःसन्देह सोनार किला आने वाले समय में मात्र एक सपना बनकर रह जायेगा। चूँकि इस स्मारक के निर्माण में मसाले का प्रयोग नहीं किया गया है अतः जल निकास का बाधित होना किसी भी समय स्मारक के लिए विनाशकारी साबित हो सकता है। समय आ गया है कि उक्त सारी अवैध गतिविधियों पर रोक लगाई जाय अन्यथा इस अमूल्य विरासत को लम्बे समय तक सुरक्षित रख पाना मुश्किल होगा और जिसके लिए हम स्वयं जिम्मेवार होंगे। उक्त सन्दर्भ में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा किले की सुरक्षा हेतु समय समय पर प्रयास किये जाते रहे हैं, तथापि इसके दीघार्यु होने हेतु आम नागरिको एवं स्थानीय प्रशासन से सहयोग की महती अपेक्षा है।

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा किये गये प्रमुख संरक्षण कार्यो में किले की प्राचीर एवं बुर्जो के ध्वस्त भाग का संरक्षण तथा दीवार में आई दरारों को पाटना मुख्य है। सुरज पोल के दोनों ओर स्थित बुर्जो के क्षरित पाषाण खण्डों को नये मजबूत पाषाण खण्डों से बदल दिया गया है। दक्षिण व पूर्वी भाग के रास्तों में जल के हौद तक जो बेकार मलबे पड़े थे, उन्हें हटा दिया गया है। सीधी चढ़ाईयों (रैम्प) को पुनः व्यवस्थित करने तथा तोपों के सामान्य मरम्मत का कार्य कर लिया गया है। अखय पोल के बुर्ज सख्या 1 एवं 2 तथा गोपा चौक से सब्जी मण्डी के बीच स्थित बुर्ज संख्या 3 एवं 4 के चौड़े दरारों को भर दिया गया है। अद्यतन भी बुर्जो के मरम्मत का कार्य प्रगति पर है। हिन्दू व जैन मंदिरों के गुम्बदों व छतों को जलनिरोधक बनाना तथा उनके पलस्तरों के मरम्मत का कार्य महत्वपूर्ण है। शिखर में मौजूद जोड़ों को चिनाई के द्वारा पुनः मजबूती प्रदान की गई है।

लोद्रवाः- जैसलमेर से 16 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित लोद्रवा, लोधरा राजपूतों की राजधानी रहा, जिसे लोद्रवापुर के नाम से जाना जाता था। सन् 1025 ई0 में महमूद गजनी तथा 1175 ई0 में मोहम्मद गोरी द्वारा यह शहर दो बार भयंकर विध्वंसों की विभीषिका से गुजरा । चारों ओर से सुरक्षा दीवार से घिरा यह शहर स्वंय में अनेक मंदिरों एंव आवासियों भग्नावशेषों को समेटे हुए है। सुरक्षित खड़ा पार्श्वनाथ मंदिर आज भी लोदर्वा के अतीत के वैभव की याद दिलाता है। हिंगलाज माता मंदिर (10वी सदी ई0) का अवशेष इसके वैभव का एक अन्य उदाहरण है। इस मंदिर के 200 मीटर उत्तर पूर्व में मूमल की मेढ़ी पर दसवीं सदी के लगभग का एक प्राचीन शिव मंदिर है, जिसके भीतर चतुर्मुख शिवलिंग प्रतिष्ठापित है। इस मंदिर से समीप ही एक अन्य अज्ञात छोटा देवालय है, जिसके समक्ष एक स्मारक स्तम्भ है। पारम्परिक लोक अनुश्रुतियों के अनुसार लोदर्वा, महेन्द्र एवं मूमल की स्थानीय प्रेम कथा से भी जुड़ा रहा है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के जयपुर मण्डल के द्वारा हाल ही में कराए गए उत्खनन से बुर्ज सहित रक्षा प्राचीर के ध्वंसावशेष तथा लगभग 9 वी शताब्दी ई0 के एक मंदिर की नींव प्रकाश में आई है।

अपील :- इन गौरवपूर्ण स्मारकों की समुचित सुरक्षा तथा संरक्षण हेतु यहाँ आने वाले सभी पर्यटकों तथा नागरिकों से सहयोग अपेक्षित है। हमें आपसे निवेदन है कि :-

1. स्मारकों की दीवारों पर कुछ न लिखे और न ही कुछ उकेरें।
2. किले के रक्षा प्राचीर पर न चले।
3. किले के भीतर या इर्द-गिर्द अवैध अतिक्रमण न करें।
4. किले के नालियों व अन्य भागों में कूड़ा-करकट या कोई अन्य अपशिष्ट न फेकें।
5. किले के जल निकास प्रणाली को बन्द न होने दें, अन्यथा यह सम्पूर्ण किले के लिए विनाशकारी साबित हो सकता है।
6. स्मारक के भीतर किसी भी तरह के वाहनों के प्रयोग की अनुमति न दें।
7. स्मारकों का दुरूपयोग न करें।

"आइये हम संकल्प लें कि यह हमारी राष्ट्रीय विरासत है। हम इसका सम्मान करें, इसे सुरक्षित रखें एवं मूल स्वरूप में इसे अपनी भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित कर अपने दायित्व का समुचित निर्वाह करें।"

आलेख : डॉ डी. एन. डिमरी, शिवनारायण भगत
छायाचित्र : एस. सी गुप्ता

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल,जयपुर 2004

मुद्रक : प्रिन्ट-ओ-प्रिन्ट, खजाने वालों का रास्ता,जयपुर फोन : 2315967,9414043784